❍ 29 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *याद की रूहानी दौड़ में आगे बड़े ?*

➢➢ *पवित्र बनने और बनाने की युक्ति रची ?*

➢➢ *श्रेष्ठ स्थिति द्वारा सुखमय स्थिति का अनुभव किया ?*

➢➢ *समय रुपी खजाने को व्यर्थ जाने से बचाया ?*

────────────────────────

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂
✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ *फ़रिश्ता स्थिति डबल लाइट स्थिति है, इस स्थिति में कोई भी कार्य का बोझ नहीं रहता, इसके लिए कर्म करते बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप यह मन की एक्सरसाइज करो।* जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा, सदा डबल लाइट रहे, सेवा का भी बोझ नहीं रहा, ऐसे फालो फादर करो तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे।

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

————————————————————

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✺ *"मैं तख्तनशीन श्रेष्ठ आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को तख्त-नशीन श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करते हो? आत्मा सदा किस तख्त पर विराजमान है, जानते हो? इसको कौनसा तख्त कहते हैं? अकाल है ना। *आत्मा अकाल है, इसलिए उसके तख्त का नाम भी अकालतख्त है। आत्मा शरीर में सदा भृकुटि के बीच अकालतख्त-नशीन है। तो तख्त नशीन जो होता है उसे राजा कहा जाता है। तख्त पर तो राजा ही बैठेगा ना। तो आप आत्मा भी अकालतख्त-नशीन राजा हो।* अकालतख्त-नशीन आत्माएं बाप के दिल का तख्त और विश्व के राज्य का तख्त भी प्राप्त करती हैं। तो तीनों ही तख्त कायम हैं? तख्त पर बैठना आता है? या घड़ी-घड़ी नीचे आ जाते हो?

〰✧ *जो पहले अकालतख्त-नशीन हो सकते हैं वही बाप के दिलतख्त-नशीन हो सकते हैं और जो दिलतख्त-नशीन हैं वही विश्व के राज्य के तख्त-नशीन हो सकते हैं। तो पहला आधार है-अकालतख्त। स्वराज्य है तो विश्व-राज्य है। जिसको स्वराज्य करना नहीं आता वह विश्व का राज्य नहीं कर सकता। तो स्वराज्य का तख्त है यह भृकुटि-अकालतख्त। बाप और बच्चे के सम्बन्ध का तख्त है बाप के दिल का तख्त। इन दो तख्त के आधार पर विश्व के राज्य का तख्त।* तो पहले फाउन्डेशन क्या हुआ? अकालतख्त। अकालतख्त-नशीन आत्मा सदा नशे में रहती है। तख्त का नशा तो होगा ना। लेकिन यह रूहानी नशा है। अल्पकाल का नशा नहीं, नुकसान वाला नशा नहीं। यह रूहानी नशा हद के नशों समाप्त कर देता है। हद के नशे तो अनेक प्रकार के हैं और रूहानी नशा एक

है। मैं बाप का, बाप मेरा-यह रूहानी नशा है। बाप का बन गया-यह रूहानी नशा है। तो यह रूहानी नशा सदा रहता है? या उतरता-चढ़ता है-कभी ज्यादा चढ़ता, कभी कम चढ़ता?

〰✧ अगर कोई राजा हो, तख्त भी हो लेकिन तख्त का, राजाई का नशा नहीं हो तो वह राजा बिना नशे के राज्य चला सकेगा? अगर आत्मा रूहानी नशे में नहीं तो स्वराज्य कैसे कर सकेंगे? राज्य में हलचल होगी। *देखो, प्रजा का प्रजा पर राज्य है तो हलचल है ना। अगर आत्मा स्वराज्य के नशे में नहीं, तो प्रजा का प्रजा पर राज्य हो जाता है-यह कर्मेन्द्रियां ही राज्य करती हैं। तो प्रजा का राज्य हुआ ना। उसका नतीजा होगा-हलचल। तो सदा तख्त-नशीन आत्मा का रूहानी नशा रखो।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ आग में पडा हुआ बीज कभी फल नहीं देता। तो *इस हिसाब-किताब के विस्तार रूपी वृक्ष को लगन की अग्नि में समाप्त करो।* फिर क्या रह जायेगा? देह और देह के सम्बन्ध वा पदार्थ का विस्तार खत्म हो गया तो *बाकी रह जयेगा 'बिन्दु आत्मा वा बीज आत्मा'* जब ऐसे बिन्दु, बीज स्वरूप बन जाओ तब आवाज से परे बीजरूप बाप के साथ चल सको।

〰✧ इसलिए पूछा कि आवाज से परे जाने के लिए तैयार हो? विस्तार को समाप्त कर दिया है? बीजरूप बाप, बीज स्वरूप आत्माओं को ही ले जायेंगे। बीज स्वरूप बन गये हो? *जो एवररेडी होगा उसको अभी से अलौकिक अनुभूतियाँ होती रहेगी।* क्या होगी?

〰✧ चलते, फिरते, बैठते, बातचीत करते पहली अनुभूति - यह शरीर जो हिसाब-किताब के वृक्ष का मूल तना है जिससे यह शाखायें प्रकट होती हैं, *यह देह और आत्मा रूपी बीज, दोनों ही बिल्कुल अलग हैं।* ऐसे आत्मा न्यारे-पन का चलते-फिरते बारबार अनुभव करेंगे। नॉलेज के हिसाब से नहीं कि आत्मा और शरीर अलग है। लेकिन शरीर से अलग मैं आत्मा हूँ। यह अलग वस्तु की अनुभूति हो।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ शुभ चिंतन का आधार हैं शुभ चिंतक बनने का। पहला कदम है स्व-चिंतन। *स्वःचिन्तन अर्थात् जो बापदादा ने 'मैं कौन' की पहेली बताई है उसको सदा स्मृति-स्वरूप में रखना।* जैसे बाप और दादा जो है, जैसा है - वैसा उसको जानना ही यथार्थ जानना है और दोनों को जानना ही जानना है। ऐसे स्व को भी - जो हूँ जैसा हूँ अर्थात् *जो आदि-अनादि श्रेष्ठ स्वरूप हूँ, उस रूप से अपने आपको जानना और उसी स्वचिन्तन में रहना इसको कहा जाता है - 'स्व-

चिन्तन'।*

₊˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

₊˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अपने हमजिंसो का उद्धार कर, अपनी जवाबदारी निभाना"*

➳ _ ➳ मनमीत बाबा के प्यार के आगोश में डूबी हुई... मै आत्मा प्रकर्ति की खूबसूरती को निहार रही हूँ... मेरी आँखों के सामने खुबसूरत गुलाब है... इन्हे देखते हुए ईश्वरीय प्यार में रूहानी गुलाब बने... अपने गुलाबी जीवन और दिव्य गुणो की खुशबु पर मन्त्रमुग्ध हो रही हूँ... सोचती हूँ... कैसे ईश्वरीय पालना में जीवन का कायाकल्प हो उठा है... बागबान बाबा की पालना में... मै आत्मा किस कदर खिली खिली सी, सुगन्ध लिए सबसे प्यारी और अनोखी बन गयी हूँ... *तभी दिल से बागबान बाबा को पुकारती हूँ... ओ मेरे मीठे बागबान बाबा*... और अगले ही पल अपने खुबसूरत बागबान की बाँहों में समा जाती हूँ...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को वन्दे मातरम् का गहरा अर्थ समझाते हुए बोले ;-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वर पिता ने धरा पर आकर ज्ञान कलश माताओ पर सुशोभित किया है,.. तो माताओ को अपनी ईश्वरीय जवाबदारी समझ... अपनी हमजिंसो का उद्धार करना है... *उनकी राहो में खुशियो के फूल खिलाकर स्वर्ग का अधिकारी बनाना है.*.."

➺ _ ➺ *मै आत्मा अपने प्यारे बाबा के विशाल दिल और स्नेह को देख कह रही हूँ ;-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा आपसे पाये अमूल्य प्यार की दौलत हर दिल पर लुटा कर खुशियो से सजाती जा रही हूँ... *दुखो से, विकारो से छुड़ाकर आपके प्यार तले दिव्य गुणो की मूरत बना रही हूँ.*.. आपके आगोश में हर आत्मा को सच्चा सुख अनुभव करा रही हूँ..."

❈ *प्यारे बाबा अपनी ज्ञान रश्मियों को लुटाते हुए बोले :-* "मीठे लाडले बच्चे... इस दुखमय संसार को स्वर्ग रुपी जन्नत बनाने में मीठे बाबा के मददगार बनकर... अपनी खुबसूरत तकदीर को सजा लो... अपनी हम जिंसों के दामन से दुखो के कांटे चुनकर... सुख भरे फूलो की खशबू भर दो... *सबका कल्याण करने वाले विश्व कल्याणकारी बनकर मुस्कराओ.*.."

➺ _ ➺ *मै आत्मा अपने मीठे बाबा को दिल से वादा करते हुए बोली :-* "मीठे मीठे बाबा... मै आत्मा आपके प्यार को पाकर और ज्ञान रत्नों की अमीरी से सजकर...सबको सुख देने वाली, सबका उद्धार करने वाली मा सुखदाता बनकर खिल उठी हूँ... *सबके दुःख के आँसू पोंछ कर, खुशियो के मोती खिला रही हूँ.*.."

❈ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को बड़ी ही उम्मीदों से देखते हुए कह रहे है :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... इस धरती से दुखो का नामोनिशान मिटाने वाले... भगवान के मददगार बनने का सोभाग्य प्राप्त करो... सबके अधरों को खुबसूरत मुस्कराहट से सजादो... *हर दिल को सुख शांति प्रेम और सुकून का सच्चा रास्ता दिखाने वाले प्रकाशित दीपक बनो.*.."

➺ _ ➺ *मै आत्मा अपने मीठे से भगवान की दिली आस पर अपनी दृढता की मोहर लगाते हुए कह रही हूँ :-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा ज्ञान गंगा बनकर हर दिल को पावनता के रंग से धवल बनाउंगी... *चहुँ ओर सुख और शांति बिखरा हो... ऐसी खुबसूरत बगिया इस धरा पर खिला रही हूँ..*. सबको मीठे बाबा का हाथ थमाकर स्वर्ग के वर्से का अधिकारी बना रही हूँ..." ऐसे द्रढ़ वचन अपने मीठे बाबा को देकर मै आत्मा अपने तख्त पर शरीर में विराजित

हो गयी....

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप का सच्चा बच्चा बनना है*"

➳ _ ➳ अपने निराकारी स्वरूप में स्थित हो कर, सच्चे बाप के साथ सदा सच्चे रहने का मन मे दृढ़ संकल्प ले कर मैं आत्मा जा रही हूं याद की रूहानी यात्रा पर। *मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं स्पष्ट देख रही हूं इस देह में विराजमान अपने वास्तविक चैतन्य दिव्य ज्योतिर्मय स्वरूप को एक चमकते हुए सितारे के रूप में*। जैसे आकाश में चमकते हुए सितारे में से किरणे निकलती हैं ऐसे मुझे आत्मा रूपी सितारे में से भी शांति, प्रेम, आनंद, सुख, पवित्रता, ज्ञान और शक्ति की सतरंगी किरणे निकल रही हैं।

➳ _ ➳ अपने मन और बुद्धि को पूरी तरह से अपने इस सत्य स्वरूप, गुणों और शक्तियों पर फोकस करके कुछ क्षणों के लिए मैं खो जाती हूं अपने इस सुखमय स्वरुप में। *बड़े प्यार से मैं अपने इस स्वरूप को निहार रही हूं और देख रही हूं कि कितना शुद्ध और शक्तिशाली मेरा स्वरूप है*। आज दिन तक अपने इस सुखमय स्वरूप से मैं अनभिज्ञ थी। शुक्रिया मेरे प्यारे मीठे बाबा का जिन्होंने मुझे मेरे इस सत्य स्वरूप की पहचान करवाई।

➳ _ ➳ अपने सत्य वास्तविक स्वरुप का अनुभव करते-करते मैं आत्मा अपने मीठे दिलाराम बाबा की मीठी यादों में खोई हुई भृकुटि की कुटिया से बाहर निकल आती हूँ और *एक ऊंची उड़ान भर कर अति शीघ्र पहुंच जाती हूँ सूक्ष्म लोक में अपने दिलाराम बाबा के पास उन्हें अपना सच्चा सच्चा समाचार देने*।

➳ _ ➳ सूक्ष्म वतन में मेरा प्रकाश का फरिश्ता स्वरूप अपनी सम्पूर्ण

अवस्था में विराजमान है। अपने उस संपूर्ण फरिश्ता स्वरूप को धारण कर मैं फ़रिशता बापदादा के सामने पहुंच जाता हूँ और उनकी ममतामयी गोद में जा कर बैठ जाता हूँ। *अपनी स्नेह भरी दृष्टि से बाबा मुझे निहार रहें हैं। बाबा की दृष्टि से बाबा के सभी गुण मुझ में समाते जा रहें हैं।बाबा की शक्तिशाली दृष्टि मुझमें एक अलौकिक रूहानी नशे का संचार कर रही हैं*। जिससे मैं फरिश्ता असीम रूहानी आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ। बाबा के हाथों का मीठा - मीठा स्पर्श मुझे बाबा के अपने प्रति अगाध प्रेम का स्पष्ट अनुभव करवा रहा है । मैं बाबा के नयनो में अपने लिए असीम स्नेह देख कर गद गद हो रहा हूँ और बाबा को अपना सच्चा समाचार सुना रहा हूँ।

➼ _ ➼ देह अभिमान में आ कर जाने अनजाने में मुझ से जो भी गलतियां हुई है वो सब कुछ सच सच बाबा को बता रहा हूँ। *बाबा मेरी हर गलती को माफ करते हुए, दोबारा ना दोहराने की चेतावनी दे कर उसे योगबल से चुकतू करने की युक्ति बताते हुए अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख रहें हैं*। बाबा के हस्तों से अनन्त शक्तियों की ज्वाला स्वरूप किरणे निकल कर मेरे मस्तक से होती हुई मेरे अंग अंग में समा रही हैं। मैं स्पष्ट अनुभव कर रहा हूं कि ये ज्वाला स्वरूप किरणे मेरे द्वारा की हुई गलतियों से बने विकर्मों को दग्ध कर रही हैं। मैं बोझ मुक्त होता जा रहा हूँ। स्वयं को अब मैं बहुत ही हल्का अनुभव कर रहा हूँ। *देह अभिमान में आ कर दोबारा गलतियां ना हो इसके लिए बाबा मुझे सदा याद की रूहानी दौड़ में रहने की श्रीमत दे रहें हैं*।

➼ _ ➼ बाबा की श्रीमत का पालन करने का बाबा को वचन दे कर अब मैं अपने फ़रिशता स्वरूप से ब्राह्मण स्वरूप में लौट आता हूँ। और बाबा के मधुर महावाक्यों को सुनने के लिए आश्रम पहुंच जाता हूँ। अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित हो कर मैं बाबा के मधुर महावाक्य सुन रही हूं। *महावाक्य उच्चारण करते करते अब बाबा बीच मे याद की रूहानी दौड़ पर चलने की ड्रिल करवा रहें हैं*। वहां उपस्थित सभी ब्राह्मण आत्मायें सेकेंड में अपनी साकारी देह को छोड़ निराकारी आत्मायें बन रूहानी दौड़ में आगे जाने की रेस कर रही हैं। *सभी का लक्ष्य इस रूहानी दौड़ में आगे बढ़ने का है* और सभी अपने पुरुषार्थ के अनुसार नम्बरवार इस लक्ष्य को प्राप्त कर अपनी मंजिल पर पहुंच रही हैं।

➳ _ ➳ सभी आत्मायें इस रूहानी यात्रा को पूरा कर अब परमधाम में अपने प्यारे बाबा के सम्मुख बैठ उनसे मिलन मना रही हैं। परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर रही हैं। *शक्ति सम्पन्न बन कर अब सभी आत्मायें वापिस अपने साकारी ब्राह्मण स्वरूप में लौट कर फिर से बाबा के मधुर महावाक्य सुन रही हैं*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं श्रेष्ठ स्मृति द्वारा सुखमय स्थिति बनाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सुख स्वरूप आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव समय रूपी खज़ाने को व्यर्थ से बचाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा तीव्र पुरुषार्थी हूँ ।*
✺ *मैं सदा समर्थ आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ तीनों ही विशेषता सामने रख स्वयं से पूछो कि मैं कौन-सा 'त्यागी' हूँ? कहाँ तक पहुँचे हैं? कितनी पौड़ियाँ चढ़ करके बाप समान की मंजिल पर पहुँचे हैं? फुल स्टैप तक पहुँचे हो या अभी कुछ स्टैप तक पहुँचे हो? या अभी कुछ स्टैप रह गये हैं? त्याग की भी स्टैप सुनाई ना। तो किस स्टैप तक पहुँचे हो? सात कोर्स में से कितने कोर्स किये हैं? सप्ताह पाठ का लास्ट में भोग पड़ता है - तो बापदादा भी अभी भोग डाले? आप लोग तो हर गुरूवार को भोग लगाते हो लेकिन बापदादा तो महाभोग करेंगे ना। जैसे सन्देशियाँ ऊपर वतन में भोग ले जाती हैं - तो बापदादा भी कहाँ ले जायेंगे! *पहले स्वयं को भोग में समर्पण करो। भोग भी बाप के आगे समर्पण करते हो ना। अभी स्वयं को सदा प्रत्यक्ष फलस्वरूप बनाकर समर्पण करो। तब महाभोग होगा। अपने आपको सम्पन्न बनाकर आफर करो।* सिर्फ स्थूल भोग की आफर नहीं करो। सम्पन्न आत्मा बन स्वयं को आफर करो। समझा - बाकी क्या करना है वह समझ में आया?

✺ *"ड्रिल :- स्वयं को भोग में समर्पण करना।"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने सेंटर पर अपनी प्यारी दीदी से मुरली सुन रही हूं... और मुरली सुनते समय मैं पूरी तरह से दीदी के हर एक शब्द को गहराई से अनुभव कर रही हूं... और मुरली के हर शब्द से मैं एक अलौकिक चित्र बनाकर उसमें भ्रमण कर रही हूं... और अपने परमपिता को कंबाइंड स्थिति मैं फील कर रही हूं... जब मुरली समाप्त होती है... तो मुझे याद आता है... कि आज वीरवार है... और *हमारी दीदी हमारे प्यारे बाबा को अनेक तरह के व्यंजनों का भोग लगाना आरंभ कर रहे हैं... हम सभी क्लास में बैठी आत्माएं योग प्रारंभ करती हैं... तभी मैं अपने आपको मन बुद्धि से अपनी प्यारी दीदी के साथ सूक्ष्म वतन में अनुभव करती हूं...*

➼ _ ➼ और मैं अपने आप को कुछ समय बाद बापदादा के सामने सूक्ष्म वतन में अनुभव करती हूं... मैं देखती हूं कि हमारी दीदी फरिश्ता स्वरूप में बाबा के सामने खड़े हैं... और *मैं भोजन की थाली लेकर उनके पास खड़ी हूं... जैसे जैसे बाबा को भोग लगना प्रारंभ होता है... तो मुझे आभास होता है कि बाबा कह रहे हो कि यह पकवान मुझे कुछ समय के लिए खुश कर सकते हैं... और इसका कुछ ही समय के लिए मैं आनंद ले सकता हूं... मैं कुछ ऐसा भोजन चाहता हूं... जिससे मेरी खुशी अपरम्पार हो जाए...* बाबा की बात सुनकर मैं कुछ सोच में पड़ जाती हूँ... और बापदादा से पूछती हूँ... बाबा आप हमें बताएं कि आपको कैसा भोजन ज्यादा प्रिय होगा? बाबा मुस्कुराते हैं... बाबा मुस्कुराते हुए और मुझे अपनी दृष्टि से निहाल करते हुए इशारे ही इशारों में मुझे समझाने लगते हैं...

➼ _ ➼ और मुझे बाबा की दृष्टि से यह एहसास होता है... कि मानो *बाबा मुझे कह रहे हो कि जब मेरे बच्चे अपने तीव्र पुरुषार्थ से और श्रीमत का पालन करते हुए... जो अभी कच्चे फल की भांति है... अपनी उस अवस्था को परिपक्व करते हुए... अपने आपको मेरे पास उपस्थित करेंगे... तो मैं उन्हें पके हुए फल की भांति स्वीकार करके अपनी इस भूख से तृप्त हो जाऊंगा... और बच्चों के इस परिपक्व भाव के कारण वह हमेशा मेरे दिल के पास रहेंगे...* और बाबा इसका मुझे आभास बहुत गहराई से कराने लगते हैं... मैं भी उनकी शक्तिशाली किरणों द्वारा दृष्टि द्वारा अपने अंदर यह अनुभव करती हूं... कि मैं जो अभी पुरुषार्थ कर रही हूं उसको आगे बढ़ाते हुए पके हुए फल की भांति परिपक्व स्थिति में आने का पूर्ण पुरुषार्थ करूंगी... और अपने इसी संकल्प को लेते हुए मैं दीदी के साथ वहां पर फरिश्ता स्वरुप में नीचे आ जाती हूं...

➼ _ ➼ जब मैं अपने आप को फिर से स्थूल वतन में सेंटर पर अपने इस शरीर में अनुभव करती हूं... और मुझे यहां आकर तो बापदादा की कही हर बात याद आती है... और मैं मन ही मन बापदादा से और अपने से वादा कर लेती हूं... और मैं सेंटर से मुरली सुनकर परमात्मा की याद में अपने आपको अनुभव करते हुए... वापस अपने इस लौकिक परिवार में आ जाती हूं... जब मैं रास्ते से गुजर कर अपने इस गृहस्थ आश्रम में आगमन करती हूं... *मैं ये संकल्प करती हूँ की उन सभी पुराने संस्कारों को रोज अपने बाबा को अर्पण करती

चलूंगी... और साथ ही साथ स्वयं को पूर्ण रुप से पुरुषार्थ की परिपक्व अवस्था में... पके हुए फल की भांति बापदादा को अर्पण कर दूंगी... अपने इस संकल्प से मैं अपनी स्थिति को महान बनाते हुए... बाबा की याद में हर कर्म करना प्रारंभ कर देती हूँ...* इस दुनिया में रहते हुए... मैं स्वयं को परमात्मा की याद में समाने का अभ्यास करती चली जाती हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔